*IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)*
*Volume 24, Issue 8, Ser. 1 (August. 2019) 87-91*
*e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.*
*www.iosrjournals.org*

# मानव तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्ध : जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण में मीडिया का प्रयोग व वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों का एक अध्ययन।

डा. सीमा द्विवेदी
*असि0प्रो0 बी0एड0 विभाग*
*अकबरपुर महाविद्यालय, अकबरपुर, कानपुर देहात*

**शोध का आशय (Purpose of Research)–**
मानव जीवन में उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का जो योग बनता है वह प्राणी या अवयवी जीवन और विकास पर प्रभाव डालता है। पर्यावरण शब्द परि + आवरण से मिलकर बनकर बना है। परि शब्द का अर्थ – चारों ओर तथा आवरण शबद का अर्थ – आवृत या ढका हुआ है। पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के उस परिवेश या वातावरण से है जिससे हम चारों ओर से जुड़े हैं। पर्यावरण हमारे सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है। जैसे पर्यावरण के क्षेत्र का विस्तार विचारकों की निगाह में आ रहा है वह जीवन और जीवन पद्धति के हर पहलू को मानव के करीब जोड़ने लगे हैं। पर्यावरण जैविक तथा अजैविक घटकों का वह समन्वय है जो हमें चारों ओर से आवरण के रूप में ढक लेती है। वह हमारे द्वारा किए गए व्यवहार और क्रियाओं को प्रभावित करता है। पर्यावरण का विकास भौगालिक, प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण के अंतर्गत ही होता है।

**प्रस्तावना (Introduction) –** पर्यावरण बाहरी रूप से अपना प्रभाव प्रत्येक जीव जगत पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से डालता है परन्तु इसका प्रभाव बाहरी रूप से मानव समाज पर तो पड़ता ही है साथ ही आंतरिक शक्तियाँ जैसे– संवेग, प्रेरणा, सहानुभूति, इच्छा आदि मानसिक क्रियाओं पर भी इसका असर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। पर्यावरण का प्रभाव मानव जीवन पर जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक पड़ता रहता है और मानव जीवन के सभी पहलुओं को यह प्रभावित भी करता है। यह भी देखा जा सकता है कि पर्यावरण समय, स्थान एवं जलवायु के अनुसार परिवर्तित होता रहता है जिसका प्रभाव सभी सजीव व निर्जीव संगठनों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। पर्यावरण की व्यापकता और विविधता स्पष्ट रूप से असीमित है जिसका आंकलन करना अत्यंत जटिल, कठिन एवं दुलर्भ कार्य है। 1982 के पृथ्वी सम्मलेन ने पर्यावरण को विश्व राजनीति के प्रमुख मुद्दों में शामिल करा दिया। इस सम्मेलन में 170 देशो व अनेकों स्वयं सेवी संगठनों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में इस बात पर सहमति बनी कि आर्थिक वृद्धि का तरीका ऐसा होना चाहिए जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। भारत की सरकार भी विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए पर्यावरण से सम्बन्धित वैश्विक प्रयासों में भागीदारी कर रही है। जैसे भारत ने अपनी नेशनल ऑटो–फ्यूल पॉलिसी के अंतर्गत वाहनों के लिए स्वच्छतर ईंधन अनिवार्य कर दिया है। इसी के तहत 2001 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम पारित हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य अधिनियम भी पारित किए गए जिनके द्वारा भी सरकार, गैर सरकारी संगठन व विभिन्न विभाग पर्यावरण के प्रति जागरूकरता फैला रहे हैं और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर रहे हैं।
**अध्ययन क्षेत्र (Study Area) –** प्रस्तुत पर्यावरणीय अध्ययन के विषय क्षेत्र में मानव तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्ध, जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण में मीडिया का प्रयोग, वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय पर्यावरण पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित है। पृथ्वी के भौतिक तत्वो जैसे –सूक्ष्म जीव, पशु, मानव, जैविक तत्व जैसे – चट्टान, स्थलाकृतियां, मिट्टी, जलवायु, भूक्षेत्र, जल, काकार, विस्तार तथा समस्त विज्ञान आते हैं।
**परिभाषा (Definition) –** संयुक्त राज्य अमेरिका का पर्यावरणीय शिक्षा अधिनियम, 1970 (United State Environmental Education Act 1970 ) के अनुसार– ''वह शैक्षिक प्रक्रिया को मानव के प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वातावरण से सम्बन्धित है। इसमें जनसंख्या प्रदूषण संसाधनों को विनियोजन एवं निःशेषण, संरक्षण, यातायात, प्रौद्योगिकी तथा सम्पूर्ण मानवीय पर्यावरण के शहरी तथा ग्रामीण नियोजन का सम्बन्ध भी निहित है।''
(Environmental education means the educational process dealing with man's relationship with his natural and man-made surrounding and includes the relation of population, resource allocation and depletion, conservation, transportation, technology and urban and rural planning to the total human environment. )
एच0जे0 हर्सकोविट्स का कथन – ''पर्यावरण उन सब बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है जो प्राणी या अवयवी जीवन और विकास पर प्रभाव डालता है।''
लैम्ले के अनुसार– '' प्रत्येक मानव समुदाय एक निश्चित पर्यावरण में निवास करता है।''
इस प्रकार पर्यावरण का मतलब उन सभी प्राकृतिक, भौतिक, जैविक तथा मानवीय घटकों के सामूहिक नाम से है जो मनुष्य को चारों ओर से आवृत्त या ढके हुए है।

पर्यावरणीय पदार्थों में पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य एवं अन्य खगोलीय नक्षत्रों का प्रभाव आज भी देखा जा सकता है और उसको स्वीकारा भी जाता है। इनको श्रद्धा के साथ पूजा भी जाता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इन पदार्थों की आवश्यकता एवं महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

**स्वरचित कविता के माध्यम से पर्यावरण पर संदेश–**

जल जल, कल–कल की तो बाते करते,
आज जल – कल जल की बाते बताये कौन,
जल ना होगा तो, कल ना होगा,
कल जल की गम्भीरता को संभालेगा कौन,
जल तो जल है, खत्म हो गया तो, जीवन आज रहेगा न कल होगा,
जल है तो कल है, जल ही जीवन है।

सम्पूर्ण धरा पर जल के बिना कुछ भी करना सम्भव ही नहीं है। वेद आदि ग्रंथों में जल की महिमा वर्णित की गई है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही जल का विशेष महत्व रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में जल को जीवन का आधार माना गया है।

अर्थवेद में जल को कल्याणकारी बताया गया है। चाहे वो मानव हो, चाहे प्रकृति, चाहे जीव, जन्तु, पेड़–पौधे सभी के जीवन में जल की आवश्यकता होती है जो हमारे पर्यावरण का आधार है।

**शोध विधि (Research Method) –** अध्ययन से सम्बन्धित आंकड़ों के संकलन हेतु अवलोकन, समूह व्याख्यान, समूह साक्षात्कार, समूहगत चर्चा विधि का प्रयोग किया गया है।

पर्यावरण अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व (Importance and need of environmental studies) – आज और कल पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। सूत्रधारों ने ऐसी संस्कृति का विकास किया, जिससे मनुष्य को प्रत्यक्षतः पर्यावरण से जोड़ा गया है। चूंकि पर्यावरण एक गतिमान प्राकृतिक सत्ता है। मनुष्य प्रकृति का पुत्र माना जाता है। तभी तो पर्यावरण ही जीवन का आधार है। इसके बिना जीवन सम्भव ही नहीं है। वायु और पानी के अभाव में अन्य ग्रहों पर जीवन है ही नहीं। पर्यावरण में सृष्टि के अजैविक और जैविक तत्व विद्यमान हैं जो आपस में एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं। मानव जीवन के लिए सुखी जीवन, स्वच्छ वातावरण, उत्तम स्वास्थ्य और उच्च मानक वाली या उच्च गुणवत्ता वाला पर्यावरण आवश्यक होता है।

**पर्यावरण अध्ययन के विषय क्षेत्र–** पर्यावरण का विषय क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। जैसे पृथ्वी के भौतिक तत्वों जैसे मानव, जीव–जन्तु तथा अजैविक तत्व जैसे– चट्टान, कला कृतियां, जलवायु, भूक्षेत्र, मिट्टी, जल, आकार, विस्तार तथा समस्त विज्ञान समाहित हैं। पर्यावरण के विषय क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. **जीव विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन –**
   - प्राणी विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - वनस्पति विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - सूक्ष्म जीवाणु विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन
2. **भौतिक विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन–**
   - भौतिक विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - रसायन विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - गणित एवं पर्यावरणीय अध्ययन
3. **सामाजिक विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन–**
   - समाजशास्त्र एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - इतिहास एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - नैतिकशास्त्र एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - राजनीतिशास्त्र एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - अर्थशास्त्र एवं पर्यावरणीय अध्ययन
   - मनोविज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन

**पर्यावरण का महत्व –** प्राचीन काल से ही मानव ने स्वस्थ पर्यावरण की कल्पना की। पर्यावरण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमारे ऋषि–मुनियों ने भी पर्यावरण के तत्वों की विवेचना करते हुए इनके संरक्षण, विकास की और सुरक्षा की विवेचना की। सृष्टि के 5 तत्व भौतिक पदार्थों– अग्नि (सूर्य, ऊर्जा), आकाश, वायु, पृथ्वी और जल से अन्य तत्वों की रचना हुई। यहाँ तक कि मानव भी इन पाँच तत्वों से निर्मित है–

**"क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा पंच रचित यह अद्यम शरीरा।"**

सिंधु सभ्यता की मोहरों पर जो पशुओं, जानवरों, पेड़–पौधों, वृक्षों का अंकन राजाओं तथा सम्राटों द्वारा अपने राज्य चिन्ह के रूप में वृक्षों एवं पशुओं को स्थान देना गुप्त सम्राटों द्वारा बाज को पूजा जाना या पूज्य मानना, चलने वाले मार्गों में वृक्ष लगवाना, बावली, कुओं, तालाब, नहर खुदवाना दूसरे प्रदेशों से वृक्ष मंगवाना यह सब प्रयास पर्यावरण की आवश्यकता को ध्यान में रखना यह पर्यावरण के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करना। जहां तक बात रही पर्यावरण की तो

जब से मानव जाति ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करना चालू की तब से उसके नुकसान सभी को भोगने पड़ रहे हैं तथा प्रकृति के साथ अनेक वर्षों से निरंतर छेड़छाड़ करने से ही पर्यावरण को हो रहे नुकसान को देखने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। वर्तमान में इसका रूप महामारी हो या चाहे वो आपदायें हो। सन् 2020 में कोरोना जैसी भयंकर संक्रमण से जूझता पूरा विश्व इस भयावह स्थिति में पर्यावरण की आवश्यकता एवं महत्व को समझा गया और पर्यावरण से छेड़छाड़ का नतीजा किस रूप में दिखाई देता है यह हम सभी समय—समय पर देखते ही रहते हैं।
**वायु के बिना भी जीवन असम्भव है—** हम सभी जानते हैं वायु हमारे प्राणों का आधार है। यह हमारे लिए सुखकारी और रोगनाशक औषधि लेकर बहती है।
**जल के अभाव में जीवन जीवन असम्भव** है— जल भी वायु की तरह हमारे जीवन का आधार है बिना जल के हम जीवित नहीं रह सकते हैं। जल के बिना मानव जीवन की कल्पना करना भी असम्भव है। जल हमारे जीवन का आधार ह‌ै।
**ऊर्जा (सूर्य व अग्नि) के बिना भी जीवन सम्भव नहीं है—** ऊर्जा के बिना जीवन की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। सूर्य के बिना ब्रह्माण्ड में हलचल मच जाती है।
ऋग्वेद की एक ऋचा में वर्णन किया गया है। हमारी दैवीय नदियां हमारी रक्ष के लिए दयामयी बनी रहे, वे हमे पीने के लिए पानी प्रदान करती रहें और हम सभी जीव धरा पर प्रकृति की गोद में आन्नदित रहें।

जलवायु भी पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है जो मानव जीवन एवं उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
मिट्टी भी पर्यावरण का एक मुख्य तत्व है जो जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। बिना मिटटी के पेड़—पौधे उग पाना सम्भव नहीं है और पेड़—पौधों के जीव—जन्तुओं का जीवन असम्भव है। पेड़—पोधे हमारे जीवन का आधार है यह हमारे पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं तथा प्रकृति का संतुलन वनस्पति से ही बना रहता ळें सदैव मानव जीवन प्रकृति पर आश्रित है हमारी प्रकृति भी एक विराट शरीर की ही तरह है। सभी जीव—जन्तु, वनस्पति, नदी, पहाड़ आदि पर्यावरण का अभिन्न अंग—प्रत्यंग है।

पर्यावरण के वास्तविक रूप को या वास्तविक मूल्य को समझना कठिन कार्य है लेकिन हम सभी इसके महत्व का अनुमान लगा सकते हैं क्योंकि हम प्रत्यक्ष या अप्रयत्क्ष रूप से प्रकृति से जुड़े है और ऐसे जुड़े हैं कि इसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पर्यावरण जीवित जीवों को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रयुक्त शोध में प्रयुक्त प्रत्ययों मानव तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्ध : जागरूकता पर्यावरण संरक्षण में मीडिया का प्रयोग वैश्विक राष्ट्रीय और स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दे का एक अध्ययन का स्पष्टीकरण निम्नलिखित है—

डा0 रघुवंशी ने पर्यावरण की सम्पूर्ण संरचना के केन्द्र में मानव को मानते हुए सांस्कृतिक व प्राकृतिक पर्यावरण के आधार पर पर्यावरण के विभाजन का निम्न स्वरूप प्रस्तुत किया है—

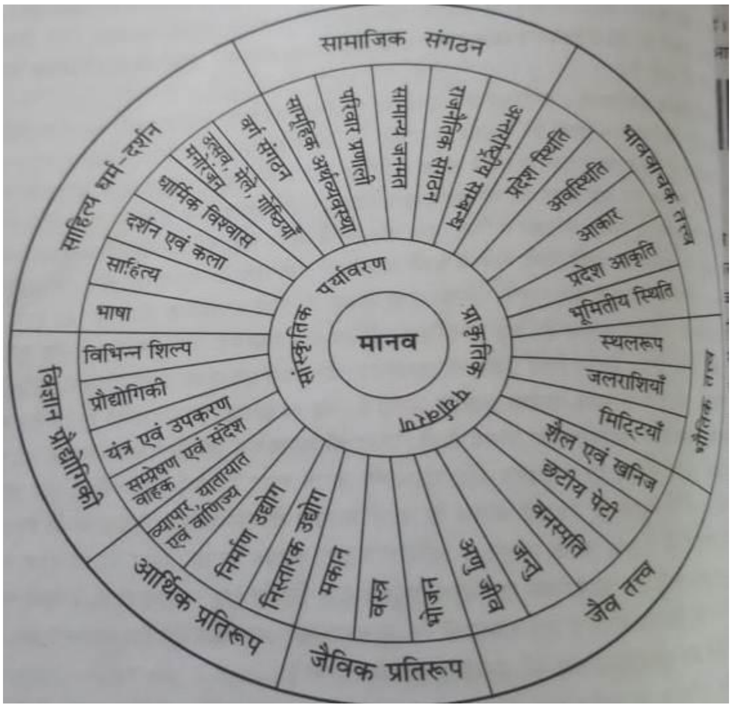


**पर्यावरण में मीडिया का प्रयोग —** मीडिया का प्रयोग करके हम पर्यावरण में जागरूकता चारों दिशाओं में फैला सकते हैं। संचार माध्यम पर्यावरण संकट के प्रति जन चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करता है। संचार द्वारा रोचक/मनोरंजक तरीके से भी लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा सकता है।
1. श्रृव्य संचार — मोबाइल, रेडियो, टेलीवीजन, टेपरिकार्ड आदि।

2. दृश्य संचार – प्रोजेक्टर माध्यम, चित्र माध्यम, पत्र–पत्रिका माध्यम, कार्टून माध्यम, मूक चलचित्र माध्यम, विज्ञापन आदि।
3. दृश्य–श्रृव्य माध्यम – सुनकर देखकर जैसे चलचित्र, दूरदर्शन, वीडियो, सिटी केबल आदि।
इसके अतिरिक्त पुस्तक एवं पत्र पत्रिकायें, यांत्रिक माध्यम, संस्थागत एवं संगठनात्मक माध्यम तथा सांस्कृतिक एवं मनोरंजनात्मक साधन भी हैं जो लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर सकते हैं।

**पर्यावरण के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका–**

एडवर्ड पब्लिकेशन के कथनानुसार – ''समूह साधन सामान्य तौर पर समाचार पत्रों, टेलीविजन, रेडियो, उच्चस्तरीय संगीत, चलचित्रों, विज्ञापनों, प्रहसनों पत्रिकाओं और पुस्तकों के अर्थ में लिए जाते हैं जो जन समूह के प्रचार का लक्ष्य रखते हैं।

**पत्र पत्रिकायें एवं पुस्तकें–** समय–समय पर पर्यावरणीय समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों में लेख के माध्यम से, बुलेटिन के माध्यमों से, निबन्ध प्रतियोगिता के माध्यम से, समाचारपत्रों के माध्यम से, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से रोचक रूप में प्रस्तुत किया जाए। उदाहरण– प्रतियोगिता दर्पण, मनोरमा, प्रतियोगिता प्रवेश, प्रतियोगिता निर्देशिका आदि अनेक पुस्तकें रहती हैं इसमें समय–समय पर पर्यावरणीय लेखों को स्थान दिया जाना चाहिए जिससे लोगों में जागरूकता उत्पन्न हो सके।

**यांत्रिक माध्यम –** यह साधन श्रव्य या दृश्य अर्थात देख व सुन कर और खुद उसका प्रयोग कर सीख सकते हैं। उदाहरण के तौर पर रेडियो, कैमरा, वीडियो, दूरदर्शन प्रोजेक्ट आदि साधनों का द्वारा लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा सकता है तथा इन सभी में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

**पर्यावरण में तकनीक का प्रयोग–** पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षण हेतु क्या शोध किया जा रहा है इसके बारे में तकनीक के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। दुनिया भर में हो रही पर्यावरणीय घटनाओं की जानकारी जैसे ओजान क्षरण, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, विनाशकारी घटनायें आदि से सम्बन्धित सूचनायें तुरंत ही संसार के विभिन्न भोगों में तकनीक द्वारा ही पहुंच जाती हैं।

भारत सरकार ने पर्यावरणीय एवं वन तंत्र की स्थापना की है जिसे पर्यावरण सूचना तंत्र कहा जाता है। इसका मुख्यालय दिल्ली में स्थापित किया गया है। पर्यावरण सूचना तंत्र के द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित सभी जानकारी ली जा सकती है जैसे– प्रदूषण के उपाय, नवीनीकरण ऊर्जा, जैव विविधता, मरूस्थलीयकरण इत्यादि के बारे में जानकारी सदैव कम्प्यूटर में संग्रहित किया जा सकता है। वर्तमान में तकनीक का विकास प्रत्येक पहलू को स्पर्श करता है तथा सूचना तकनीक आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा मीडिया से जुड़ी कार्य योजना तैयार की गयी है जिसके तहत निम्नलिखित कार्य किए जा रहे हैं–

- 'भूमि' नामक एक साप्ताहिक टेलीविजन कार्यक्रम, जो पर्यावरण से सम्बन्धित है उसका प्रति सप्ताह दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर आधे घंटे की अवधि तक प्रसारण किया जाता है।
- जल संरक्षण, आर्द्रभूमि संरक्षण, मानव–जानवर संघर्ष और वन्यजीवों का अवैध व्यापार आदि पर्यावरणीय विषयों पर 27 प्राइवेट टी0वी0 चैनलों के माध्यम से जागरूकरता अभियान चलाया जा रहा है।
- आकाशवाणी पर 12 भाषाओं में 'ये गुलिस्तां हमारा' शीर्षक से 15 मिनट की अवधि वाले कार्यक्रम का प्रसारण शुरू कराया गया है।
- पर्यावरण जागरूकता के लिए डाक्यूमेंटरी फिल्मों के माध्यम से लोगों तक जानकारी पहुंचाने के उद्‌देश्य से पर्यावरणीय मुद्‌दों से सम्बन्धित प्रत्येक वर्ष 13 फिल्मों का निर्माण करने और उन्हें दूरदर्शन पर प्रसारित करने के लिए पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- आजीविका की रक्षा के लिए मानव जानवर संघर्ष के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर के 20 पत्रकारों को रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क का भ्रमण कराया गया।
- इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में पर्यावरणीय क्विज प्रोग्राम भी शुरू किए गए हैं।

लोगों को पर्यावरण की महत्ता समझाने एवं उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए विश्व भर में स्थापित विभिन्न पर्यावरणीय विभागों एवं भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास के फलस्वरूप विश्व भर में पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न दिवस मनाये जाते हैं तथा विभिन्न कानून बनाये गए हैं जो अग्रलिखित हैं–

**पर्यावरणीय दिवस**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | विश्व पर्यावरण दिवस | – | 5 जून |
| 2. | विश्व जनसंख्या दिवस | – | 11 जुलाई |
| 3. | विश्व ओजोन दिवस | – | 16 सितम्बर |
| 4. | विश्व पर्यटन दिवस | – | 27 सितम्बर |
| 5. | ग्रीन कन्ज्यूमर दिवस | – | 28 सितम्बर |
| 6. | धूम्रपान व तम्बाकू रहित दिवस | – | 31 मई |
| 7. | पृथ्वी दिवस | – | 22 अप्रैल |
| 8. | विश्व विरासत दिवस | – | 18 अप्रैल |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9. | विश्व स्वास्थ्य दिवस | – | 7 अप्रैल |
| 10. | विश्व वायुमण्डलीय दिवस | – | 23 मार्च |
| 11. | विश्व वन्य जीव सप्ताह | – | 1 से 7 अक्टूबर |
| 12. | विश्व पशु कल्याण दिवस | – | 4 अक्टूबर |
| 13. | विश्व जल दिवस | – | 22 मार्च |
| 14. | विश्व वन दिवस | – | 21 मार्च |
| 15. | विश्व वेटलैण्ड दिवस | – | 2 फरवरी |

**पर्यावरणीय कानून व नियम**

1. जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम 1974
2. रीवर बोंडस एक्ट 1956
3. फैक्ट्रीज एक्ट 1948
4. इनफ्लेमेबल्स सब स्टाढसेज एक्ट 1981
5. वायु प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम 1981
6. जल उपकरण प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम 1977
7. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986
8. ध्वनि प्रदूषण (विनियमन एवं नियंत्रण) अधिनियम 2000
9. वन जीव संरक्षण अधिनियम 1972
10. फोरेस्ट्स कंजरवेशन एक्ट 1980
11. वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट 1972
12. जैव विविधता अधिनियम 2002

अंत में सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि आज हम जिस जगह पर खड़े हैं वहां अब भी हम पर्यावरण के प्रति जागरूक न हुए तो हमे भविष्य में इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। क्योंकि पर्यावरण के बिना जीवन नहीं है और यदि इसी तरह से पर्यावरण का दोहन होता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब पृथ्वी पर जीवन पूरी तरह से समाप्त हो जायेगा। इसलिए लोगों को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान (एनईएसी) की शुरूआत वर्ष 1986 के मध्य हुई थी। इस अभियान के तहत देश भर में गैर–सरकारी संगठन, स्कूल, कालेज, अनुसंस्धान संस्थान, सरकारी विभाग, महिला एवं युवा संगठन आदि द्वारा पर्यावरण जागरूकरता से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें सरकार द्वारा भी वित्तीय सहायता दी जाती है। इसके अतिरिक्त अनेक सेमीनार, संगोष्ठी व कार्यशालायें आयोजित की जाती हैं तथा इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया (टेलीविजन और समाचार पत्र ) फिल्म और थिएटर मीडिया के माध्यम से भी लोगों को जागरूक करने का प्रयास हो रहा है। अतः इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भविष्य को संभव बनाने के लिए पर्यावरण की रक्षा एवं बचाव अनिवार्य है।

**संदर्भ सूची–**

1. पर्यावरणीय शिक्षा :– डा0 रत्नर्तु मिश्रा, डा0 अंकुर वर्मा, डा0 राजन दीक्षित, डा0 मोहम्मद इरशाद हुसैन
2. वर्तमान शिक्षा नीति स्वरूप एवं सम्भावनाएं : – डा0 सीमा द्विवेदी
3. पर्यावरणीय शिक्षा :– शिप्रा मिश्रा